बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
बाँदा - २१०००१ (उ०प्र०)

मौसम आधारित कृषि सलाह
(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 77/2023)
Year: 4th

जिला: बाँदा	जारी करने की तिथि: 01/02/2023

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	शाक-भाजी	➢ कद्दू वर्गीय सब्जियों (खीरा, कद्दू, लौकी, तरोई, करेला) की अगेती खेती के लिऐ पॉली बैग में पौध उत्पादन करके अगेती रोपाई अथवा सीधे खेत में बुआई करें। ➢ टमाटर, बैंगन, गाजर, मेथी, चुकंदर, शलजम, पालक आदि की बेमौसमी उत्पाद हेतु बुआई कर दें । अगेती फसल के लिए भिन्डी, लोबिया, चौलाई, कुल्फा की भी बुआई कर दे। ➢ खड़ी फसलों में कीट एवं व्याधि प्रबंधन पर विशेष ध्यान दें। ➢ सिंचाई जल तथा अन्य संसाधनों की बचत व सदुपयोग हेतु बैंगन, टमाटर, मिर्च या गोभी की खेती ड्रिप सिंचाई पद्धति तथा काली पॉलीथिन का प्रयोग करके किया जा सकता है।
2-	शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन	मौसम में अचानक से बदलाव हो रहा है तेज धूप के साथ तापमान में भी काफी उतार चढाव देखने को मिल रहा है। ऐसे में गेहूँ की फसल में समय-समय पर पानी लगाना आवश्यक है। फसल की अवस्था एवं मृदा के अनुरूप एक निशिचित अन्तराल पर पानी लगाना लाभदायक होता है। समय से बोयी गयी सरसों की फसल अब परिपक्वता के करीब है। इसकी समय पर कटाई सुनिश्चित की जानी चाहिए। खेत खाली होने की दशा में मुंग एवं उरद की बोआई का कार्य शुरू कर दें। बोआई के समय १८ किग्रा नत्रजन व ४५ किग्रा फॉस्फोरस की मात्रा का प्रयोग प्रति हेक्टेयर की दर से करें। इसके लिए लगभग ४० किग्रा डी० ए० पि० प्रति एकड़ की दर से खेत में देना चाहिए। बीजों की बोआई अगर सीडड्रिल से की जाए तो अच्छा रहता है। इस तरह से खाद एवं बीज दोनों मिट्टी में एक साथ यथास्थान दिया जा सकता है। बोआई से पहले बीजों को राईजोबियम कल्चर से उपचारित करना लाभदायक रहता है। १ किग्रा बीज के लिए ४ ग्राम राईजोबियम कल्चर या ४-६ मिली तरल राईजोबियम को १० प्रतिशत गुड़ के घोल के साथ मिलाकर उपचारित करें। उपचार के बाद बीजों को ३० मिनट तक छाया में सुखाकर बोआई शुरू करें। उर्द व मुंग की फसल को मृदा एवं बीज जनित रोगों से बचाने हेतु थिरम २.५ ग्रा प्रतिकिग्रा बीज की दर से उपचारित करके बोयें।
3-	पशुपालन प्रबंधन	वर्तमान में जैसा की हम देख रहे हैं की मौसम में अचानक से बदलाव हो रहा है। तेज धूप के साथ तापमान में भी काफी उतार चढाव देखने को मिल रहा है।

		ऐसे समय में मौसम में परिवर्तन के दौरान हमे पशुओं की सही ढंग से देखभाल करनी चाहिए और उचित मात्रा में भोजन (राशन) भी देना चाहिए जिससे की पशुओं की प्रजनन क्षमता अच्छी बानी रहे और उनके स्वास्थ पर भी कोई विपरीत प्रभाव न पड़े। पशुओं की प्रजनन क्षमता प्रभावित होने के पीछे मौसम में बदलाव भी एक प्रमुख कारक है इसलिए मौसमी प्रभाव से बचाने पर पशुओं की प्रजनन क्षमता भी अच्छी बानी रहती है। पशुपालक अपनी गाय व भैंस के हीट में आने पर (गर्म होने पर) अच्छी नस्ल के सांड से ही उचित समय पर ग्याभिन कराएं साथ ही ध्यान देंवे कि गाय व भैंस के दो से तीन माह के ग्याभिन होने पर पशु चिकित्सक से गर्भ का परीक्षण अवश्य कराएं एवं ब्याने वाले पशुओं का विशेष ध्यान रखते हुए अन्य पशुओं से अलग रखें। ब्याने वाले पशुओं को दुग्ध ज्वर (प्रसूति बुखार) से बचाने के लिए खनिज मिश्रण 50–60 ग्राम अवश्य दें । हरे चारे के लिए उगाई जा रही बरसीम व जय फसलों कि सही समय पर कटाई करते रहें। पशुओं को साफ व ताजा पानी पिलाएं व पशुओं का विछावन समय – समय पर बदलते रहें एवं पशु को ठण्ड लगने कि दशा में नजदीकी पशु चिकित्सक से संपर्क करें।
4–	**कीट-प्रबंधन**	➢ चना/मटर/ मसूर में फली बेधक के नियंत्रण हेतु फसल की नियमित निगरानी करते रहें 5 फेरोमोन ट्रैप प्रति हे0 की दर से खेत मे लगायें। आवश्यकतानुसार नीम गिरी 4 प्रतिशत अथवा एच0एन0पी0वी0 250 एल0इ0 250–300 मिली0 300–400 लीटर पानी मे घोलकर प्रति हे0 की दर से सायंकाल छिड़काव करके कीट का जैविक नियंत्रण करें। सेमीलूपर कीट के रासायनिक नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 की 2 लीटर मात्रा प्रति हे0 की दर से 600–700 लीटर पानी मे घोलकर छिड़काव करना चाहिये। ➢ अरहर में फली की मक्खी कीट से प्रकोपित फलियों की दशा में एसीफेट 75 प्रतिशत एस0 पी0 1 ग्राम प्रति लीटर अथवा लैम्ब्डा साह्यलोथ्रिन 5 प्रतिशत ई0सी0 0.8 मिली0 प्रति लीटर अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 3 मिली0 को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। ➢ सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए। बैगन की फसल में कलंगी एवं फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु 10 मीटर के अन्तराल पर प्रति हेक्टेयर में 100 फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क नर कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए व क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल कीटनाशी की 100 मिलीलीटर मात्रा को 250 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से 10 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करना चाहिए। टमाटर में फल बेधक सूड़ी के नियंत्रण हेतु एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत की 2.5 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से आवश्यकतानुसार

		8–10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें। रस चूसने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु थायोमेथोक्साम 25 प्रतिशत डब्लू0 जी0 3 ग्राम को 10 लीटर अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 3 मिली0 को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। ➢ आम में मिली बग कीट व भुनगा कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस0एल0 की 0.3 मिली0 अथवा बुप्रोफेजिन 25 प्रतिशत एस0सी0 2 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तरालपर 2–3 छिड़काव करें।
5-	**पादप रोग प्रबंधन**	➢ इस मौसम में सरसो की पछेती फसल में चूर्णिल आसिता (पाउडरी मिल्डयू) रोग के संक्रमण होने की सम्भावना है किसान भाई खेत की निगरानी करते रहे रोग के लक्षण दिखाई देने पर हेक्साकोनाजोल 2 ग्रा0 प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिडकाव करें। ➢ वर्तमान मौसम के मध्यनजर गेहूॅं की फसल में स्पाट ब्लाच रोग के उतपन्न होने की सम्भावना है। किसान भाई फसल की नियमित रूप से निगरानी करते रहे रोग के लक्षण दिखाई देने पर प्रापीकोनाजोल का 1 मिली प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर छिड़काव करें।
6.	**बागवानी. प्रबंधन**	➢ इस माह किसान भाइयों को गर्मी से पौधों की सुरक्षा तथा सिंचाई नालियों की मरम्मत कर लेना चाहिए। ➢ इस महीने में गर्मी की बढ़ोतरी के कारण पेड़ों को डबल रिंग पद्धति से 7 से 10 दिनों के अंतराल में सिंचाईं करें। ➢ फलदार पौधों के थालों में घास फूस या भूसे का पलवार के रूप में प्रयोग करें जिससे कि वाष्पोत्सर्जन के द्वारा होने वाले पानी के झरण को रोका जा सके। ➢ आम में भुनगा कीट से बचाव हेतु प्रोफेनोफॉस 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घुलनशील गंधक 2.0 ग्राम अथवा डाइनोकैप 1.0 मि.ली. की दर से पानी में घोलकर छिड़काव करें। ➢ काला सड़न या आन्तरिक सड़न के नियंत्रण के लिए बोरैक्स 10 ग्राम 1 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें.।
7.	**वानिकी प्रबंधन**	➢ मार्च माह में वानिकी पौधशाला में पौधारोपण सत्र की मांग की आपूर्ति करने के लिए कार्य योजना जैसे पौधशाला में अंकुरण बेड और पॉलीबाग भरने के लिया ग्रोइंग मीडिया इत्यादि तैयार करें। ➢ अंकुरण हेतु अंकुरण बेड (1 मीटर चौड़ा और 10 मीटर लंबा) तैयार करें। ➢ पॉलीबैग भरने हेतु ग्रोइंग मीडिया बनाने के लिए छनी मिट्टी तथा सड़ी हुई गोबर की खाद का 2 : 1 के अनुपात में मिश्रण बनायें। ➢ पौधशाला में पुरानी पौध का स्थानांतरण सावधानी के साथ सायंकाल में करें और मिट्टी से जुड़ी जड़ों को तेज धार वाले औजार से काटें। स्थानांतरण पश्चात् पौधों की सिंचाई करें। ➢ वानिकी पौधशाला को खरपतवार और रोग मुक्त रखें। ➢ कृषि वानिकी के अंतर्गत लगाए गए पेड़ों की आवश्कतानुसार सिंचाई करें।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार	7. डॉ मयंक दुबे
2. डॉ दिनेश साह	8. डॉ अमित मिश्रा
3. डॉ ए.सी. मिश्रा	9. डॉ दिनेश गुप्ता
4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव	10. डॉ पंकज कुमार ओझा
5. डॉ राकेश पाण्डेय	11. डॉ सुभाष चंद्र सिंह
6. डॉ विवेक सिंह	